International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 11-10-2020; Accepted: 26-10-2020; Published: 13-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 25-26

डॉ० रामविलास शर्मा का कवित्व दर्शन

Dr. Kavita Yadav
Assistant Professor, Department of Hindi, R.P. Memorial Mahavidyalaya, Luhasi, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

डॉ० रामविलास शर्मा एक शीर्षस्थ आलोचक, महान विचारक भाषाविद, साहित्यिक पूरोधा के साथ–साथ एक सहज जनवादी कवि भी हैं। ये बात और है कि उनकी प्रसिद्धि आलोचक रूप की ज्यादा हैए लेकिन इसका मतलब बिल्कुल नहीं की उनकी कविताएँ कम महत्व की हैं। उनकी कविताएँ तो सहज ही जन संवेदनाओं से सरोकार रखती हैं। दबे कुचले लोगोंए मिल–मजदूरों, किसानों के दुख दर्द को महसूस कराती, मन को द्रवित करती हैं। दूसरी तरफ उनकी कविताओं में वर्ण्य विषय की विविधता भी खूब मिलती है। प्रकृति के मनोरम रूप उन्हें खूब लूभाते है। उनका प्रकृति दर्शन कोरी कल्पनाओं का नहीए बल्कि गाँव की मिट्टी की सोंधी सुगन्ध लिए हुए है। उनमें अवध–बैसवारे का रंग भी हैए तो भारत वर्ष की समूची प्रकृति छटा का दिग्दर्शन भी। अतः वे एक समर्थ एवं संवेदनशील कवि है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन की शुरूआत काव्य सृजन से किया। कालान्तर में कुछ विशेष परिस्थितियों वश वे आलोचना की तरफ बढ़ते गये और एक शीर्षस्थ आलोचक बन गयेए परन्तु कवित्व उनके अन्दर हमेशा विद्यमान रहा। इस संदर्भ में शिव कुमार मिश्र कहते है कि "डॉ० रामविलास शर्मा की मनोभूमि में उनके आलोचक रूप के समानान्तर विद्यमान उनके कवि रूप को आगे स्पेस मिली होती तो प्रगतिशील कविता की त्रयी में नागार्जुनए केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन के साथ चौथा नाम उनका होता। उसी तरह जिस तरह छायावादी कविता की वृहतत्रयी में प्रसाद निराला, पंत के साथ चौथा नाम महादेवी वर्मा का लिया जाता है।"[1]

निःसंदेह काव्य सृजन की प्रतिभा उनमें बहुत थी। 1943 में प्रकाशित ख्याति प्राप्त पत्रिका 'तारसप्तक' के वे महत्वपूर्ण स्तम्भ थे। तार सप्तक के प्रकाशन के तेरह वर्ष बाद 1956 में उनकी कविताओं का एक स्वतंत्र संग्रह 'रूप तरंग' नाम से प्रकाशित हुआ। 'रूप तरंग' के बाद दूसरा काव्य संग्रह 'सदियों के सोये जाग उठे' प्रकाशित हुआ। इन काव्य संग्रहों में प्रकाशित कविताएँ उस समय की पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थी, जो डॉ० रामविलास शर्मा की प्रगतिशीलता की सूचक थी।

तारसप्तक की सशक्त काव्य रचनाएँ उनकी काव्य प्रतिभा की प्रमाण हैं। इस संदर्भ में रघुनाथ विनायक तावसे ने लिखा हैः– "तार सप्तक के सातों कवियों में दो ही कवि ऐसे है, जिनके काव्य में बर्हिमुख प्रवृत्ति गहरे रूप में फूट उठी है। वे है श्री रामविलास शर्मा और श्री प्रभाकर माचवे। माचवे जी कविताएँ अधिकतर लिखते कम गढ़ते अधिक प्रतीत होते हैं। रामविलास जी का काव्य इस आकायुत में दूर ग्राम–श्री के अभिनव सौन्दर्य, सुरम्य एवं मर्मस्पर्शी सुझ से भरा है।"[2]

डॉ० रामविलास शर्मा की काव्य रचनाएँ यथार्थ की पृष्ठभूमि पर निर्मित सहज जन की इच्छा–आकांक्षाओं से प्रेरित है, उनके दुःख–दर्द को बयाँ करती है एवं किसान की मनः स्थितियों का सजीच चित्रण करती है। साथ ही साथ एक सजीव वातावरण का सृजन करती हैं। कतकी, सिलहार, किसान और उसका पुत्रए मॉए तूफान के समय, संतरण, आदि कविता, विषय–वस्तु की सजीवता की प्रमाण है। डॉ० शर्मा मिट्टी से जुड़े साहित्यकार थे, उन्हें अपनी धरती व अपने लोगों से बहुत जुडाव था, इसलिए अपनी रचनाओं में गंवई संस्कृति को कभी नही भूले, उनकी रचनाओं में अवध बैसवारे के किसानए मजदूर वहाँ की प्रकृति, बैसवारे के ताल–तलैया सब जीवंत हो उठे हैं। सुदूर बैठा व्यक्ति भी इस ग्रामीण अंचल का रसपान कर सकता है। 'किसान कवि और उसका पुत्र' कविता में वर्षा और किसान के पारस्परिक संबंध का एक उदाहरण देखिए–

"वर्षा से धुलकर निखर उठा नीला–नीला
फिर हरे हरे खेतों पर छाया आसमान
उजली कुंआर की धूप अकेली पड़ीहार में
लौटे उस बेला सब अपने घर किसान"[3]

"लहराती पुरवाई के झोकों पर आये
धूल भरे लू से झुलसे खेतों पर छाये
आमों की सुंगन्ध से महक उठी पुरवाई
पिउ–पिउ के रव से गुंज उठी अमराई।"[4]

प्रकृति प्रेम को दर्शाने वाली उनकी अनेक कविताए है जैसे प्रत्यूष के पर्व, कतकी, डलमउ में गंगा, ऋतुसंहार आदि। धरती से उनका लगाव व्यापक है, जिसमें समूचा भारत समाहित है। समुद्र के किनारे, कलकता, गुरूदेव की पूज्यभूमि, खजुराहों के मासन, कृष्णा तट पर पंडाल, वंदिनी कोकिल इत्यादि कविताएँ रामविलास जी की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जो उनके संवेदनशील मन को दर्शाती हैं।

रामविलास जी के कवि मन का एक पहलू और भी हैए जिसमें वे व्यग्य, कटाक्ष करने के साथ बाल मन को भी गुदगुदाते हैं। राजनीतिक विद्रुपताओं को व्यक्त करने के लिए व्यंग्य परक उक्तियों का प्रयोग करते हैं, जिसमें कभी निरंजन, तो कभी 'अगिया बैताल' बन जाते हैं। घर में बच्चों को खुश करने लिए लिए प्रायः छोटे–छोटे तुकवंदियों से उनका दिल जीत लेते थे।

श्तनु चीनू ने खोली दुकान
कैनाडा जाकर लाए सामान
और बनाया हवाई जहाज
नाम है उसका शेरअन्दाज।
दिल्ली से चला राजस्थान
राजस्थान में बीकानेर
बीकानेर में उतरा शेर।"[5]

राजनीतिक उलट–फेर राजनेताओं की स्वार्थ लोलुपता को लेकर उन्होने बहुत से संत–महात्माओं के पदोंए भजनों की शैली में वर्तमान की दुर्दशा का चित्रण किया "ये कविताए संत भक्तों के पदों की पैरोडी नही, उनके सहारे अपनी बात कहने और कह पाने का नायाब तरीक भर है।"[6] कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैंः–

"बसो मेरे नैनन में गोपाल!
पाप की मूरत, साँप की सूरत, नैंना करै हलाल।
मोह का मुकुट, कपट के कुंडल, देशभक्ति की भाल।
राजभक्ति की बजै पैंजनी, सुनि सब लोग निहाल।" [7]

"झूला झूले जवाहरलाल
सोने का पाटा, रेशम की डोरी, फन्दा पड़ा है ऊँची डार।
धरती छोड़ अब आसमान में, झूलै मेरी सरकार।
होए झूला झूले जवाहरलाल।"[8]

इसी तरह लाठी पुराण कविता में उन्होंने 'अगिया बैताल' नाम से लाठी के गुण का व्यंगात्मक चित्रण किया है, जो इस प्रकार हैः–

"लाठी में गुन बहुत है सदा राखिए संग।
कैसी जुरे समाज पर फीका हो न रंग।
फीका होय न रंग बात जल्दी समझावै।
सीधे फोरि कपार बात भीतर धंसि जावै।
कह अगिया बैताल अहिंसा की परिपाटी।
अकिल काम नहिं देय तुरत लीजै तब लाठी।।" [9]
डॉ० रामविलास शर्मा की प्रगतिशीलता सीधे जनता से संवाद करती है। उनमें उदासीनता बिल्कुल नहीं है, वे एक निर्भीक योद्धा की भाँति मैदान में हमेशा डटे रहे।
"अपनी जनता की शक्ति में डिगता जिसका विश्वास नही,
दुश्मन के अनगिनत वारों से, होता वह वीर निराशा नही।" [10]

ये पंक्तियाँ डॉ० रामविलास शर्मा पर पूरी तरफ चरितार्थ होती हैं। उनके काव्य दर्शन का फलक बहुत ही विस्तृत है। काव्य के हर पहलू पर विचार–विमर्श हैए वे उच्च कोटि के जन कवि ठहरते हैंए जिनके पास जनता के दुख–दर्द की भरी जमा पूंजी है, जिसके बल पर वह हमेश आगे की पंक्ति में बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. उद्भावना अंक 104, (रामविलास शर्मा महा विशेषांक) सम्पादक प्रदीप सक्सेना, ए–21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया, जी0टी0 रोड, शाहदरा दिल्ली, संस्करण 2012 पृष्ठ सं0 17.
2. वहीए पृष्ठ 35.
3. वहीए पृष्ठ 37.
4. वहीए पृष्ठ 37.
5. कथा, अंक–17 सम्पादक मार्कण्डेय, प्रबन्ध संस्थापक डॉ० स्वस्ति सिंहए कथा प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 47.
6. उद्भावना अंक 104, (रामविलास शर्मा महा विशेषांक) सम्पादक प्रदीप सक्सेना, ए–21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरियाए जी0टी0 रोड, शाहदरा दिल्ली, संस्करण 2012 पृष्ठ सं0 21.
7. वही, 22.
8. रामविलास शर्मा का लोकपक्ष–विष्णुचन्द्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 51.
9. उद्भावना अंक 104, (रामविलास शर्मा महा विशेषांक) सम्पादक प्रदीप सक्सेना, ए–21 झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया, जी0टी0 रोड, शाहदरा दिल्ली, संस्करण 2012 पृष्ठ सं0 22.
10. रामविलास शर्मा का लोकपक्ष–विष्णुचन्द्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 51.